आर एल ए समाचार

आपकी आवाज आप तक

रामलाल आनंद महाविद्यालय, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | सत्र 2020–21 | पृष्ठ 1–4

अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में माइक्रोबायोलॉजी

माइक्रोबायोलॉजी विभाग की ओर से प्रकाशित शोध पत्रों को मिली अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में जगह

धनंजय कुमार, अनुराग सिंह

नई दिल्ली। वर्ष 2020 से पहले सारी दुनिया विज्ञान के गौरवगान में मग्न थी। हर नए रॉकेट की उड़ान के साथ विज्ञान एक कदम ऊपर उठ रहा था, लेकिन एक अदृश्य दुश्मन ने दबे पांव दस्तक दी और देखते ही देखते समूचे विज्ञान जगत को चुनौती दे डाली। ये वायरस जल्दी जाने को तैयार नहीं था ऐसे में विकल्पों की तलाश की जाने लगी जो इसके साथ जिन्दगी के पहिये घुमा सके। ऐसे में रामलाल आनंद महाविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के छात्रों ने भी ऑनलाइन शिक्षा की दुनिया में कदम रख दिया।

ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान ही विभाग ने साइंस राइटिंग एंड रिसर्च एथिक्स पर एक सर्टिफिकेट कोर्स करवाया। इसका नतीजा यह रहा कि पाँच शोध और समीक्षा लेखों का प्रकाशन हुआ। अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं और पुस्तकों में भी इसके कई अध्याय शामिल किए गए। इस प्रकाशन की देखरेख डॉ. वंदना गुप्ता कर रही थीं। इसमें कोविड–19 चिकित्सा विज्ञान (अनुराग सिंह द्वारा), कोविड–19 वैक्सीन (सिमरन प्रीत कौर द्वारा 2 प्रकाशन), कोविड–19 निदान (भावना शर्मा और फरदीन शहंशाह द्वारा) शामिल हैं। इसके अलावा विभाग ने कोरोना वैक्सीन के नैदानिक परिप्रेक्ष्य पर एक पुस्तक प्रकाशित करने का लक्ष्य रखा है। इसमें अनुराग सिंह, सिमरन प्रीत कौर, फरदीन शहंशाह और भावना शर्मा सह–लेखक की भूमिका में हैं। इसके अलावा डॉ. वंदना गुप्ता, डॉ.निधि चंद्रा और उनके मार्गदर्शन में विभाग के स्नातक छात्रों द्वारा सूक्ष्म मृदा के औद्योगिक अनुप्रयोगों के चार अध्यायों का प्रकाशन बेंथम साइंस पब्लिशर्स के अधीन जारी है।

आरएलए का माइक्रोबायोलॉजी विभाग।

माइक्रोबायोलॉजी विभाग वर्तमान में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 65 छात्रों की भागीदारी के साथ पायथन प्रोग्रामिंग पर एक सर्टिफिकेट कोर्स चला रहा है। इसके साथ ही पांच शोध परियोजनाओं को कॉलेज के शोध अनुदान के तहत स्वीकार कर लिया गया है।

इसके अलावा विभाग ने जैव सुरक्षा, जैव रसायन और आईपीआर नामक एक विकास कार्यक्रम का आयोजन किया। भारत और विदेशों से जुड़े वक्ताओं के साथ छात्रों और संकायों के लिए दो दिवसीय वेबिनार श्रंखला भी ऑनलाइन ही आयोजित की गई। इस तरह विभाग ने कोरोना जैसी महामारी में भी अपने इरादे साफ कर दिए कि हम रुकने वाले नहीं हैं। विभाग अपनी लंबी विरासत को बनाए रखने के लिए लगातार प्रयासरत है।

हिंदी आमजन की अभिव्यक्ति का सबसे सरल माध्यम है

शिल्पी

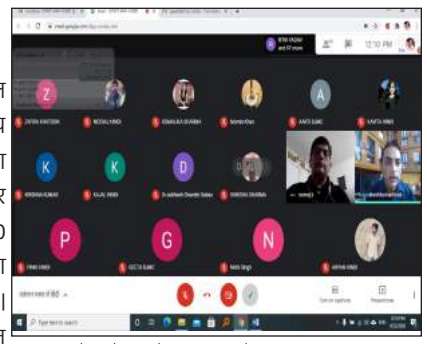

छात्रों को संबोधित करते नीरज कुमार।

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय द्वारा हिंदी पखवाड़ा के समापन के अवसर पर 23 सितंबर 2020 को वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका आयोजन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राकेश कुमार ने किया। इस वेबिनार का विषय था "वर्तमान समय मे हिंदी"।

संगोष्ठी की शुरुआत करने से पहले डॉ. राकेश कुमार ने हिंदी को आजादी की लड़ाई से जोड़ते हुए बताया कि आजादी से पहले पत्रकारिता अपने शिखर पर थी। भारत को आजाद कराने में हिंदी की भूमिका बहुत अहम रही है। इस सेमिनार के मुख्य वक्ता सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा के उप–निदेशक नीरज कुमार थे।

नीरज कुमार ने बताया कि आजादी के 70 वर्ष बाद भी हमें हिंदी भाषा के विषय को लेकर ई–संगोष्ठी करनी पड़ रही है तो ये कहीं न कहीं एक चिंतन का विषय है।

सोशल मीडिया के माध्यम से आज पूरा विश्व एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है। संचार के सबसे लोकप्रिय साधन सोशल मीडिया ने हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक समय था जब सोशल मीडिया पर लोग सिर्फ अंग्रेजी का प्रयोग करते थे। लेकिन अब सोशल मीडिया पर भी हिंदी का प्रभाव खूब नजर आता है।

समाज में हिंदी की स्थिति पर विद्यार्थियों ने भी अपने विचारों को साझा किया। वेबिनार के अंतिम भाग में नीरज कुमार ने छात्रों के प्रश्नों का उत्तर किया। तर्क वितर्क भरी इस चर्चा में हिंदी भाषा के भूत, वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं को उजागर किया। डॉ. सुभाष चंद्र डबास ने धन्यवाद ज्ञापन कर संगोष्ठी का समापन किया।

डाटा साइन्स में संभावनाओं को तलाशते छात्र

दीपशिखा

नई दिल्ली। राम लाल आनंद कॉलेज के प्लेसमेंट सेल द्वारा 16 जनवरी 2021 को वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को स्टेटिस्टिक्स से संबंधित क्षेत्रों के बारे में जानकारी देना, आम तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले प्रोग्रामिंग लैंग्वेज के बारे में बताना तथा डाटा साइंस से संबंधित नौकरियों के बारे में बताना था। इस कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में भरत कठौरिया शामिल हुए जो कि हमारे कॉलेज के पूर्व छात्र रहे हैं तथा वर्तमान में यू.के की कंपनी स्मार्ट क्यूल्स में बतौर मैने. जिंग कंसल्टेंट कार्यरत हैं।

कार्यक्रम के दौरान उन्होंने स्टेट्स और डाटा साइंस से संबंधित लाभ व अवसरों की चर्चा की। सत्र को और लाभकारी बनाते हुए उन्होंने सरकारी संभावनाओं जैसे भारतीय सांख्यिकी सेवा, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया तथा निजी क्षेत्र की संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि डाटा साइंस में इच्छुक बच्चों को किन प्रतिभाओं की जरूरत है। सत्र के आखिर में उन्होंने विद्यार्थियों को स्नातक से स्नातकोत्तर और फिर अपने इच्छानुसार जॉब चुनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया। यह सत्र ऑनलाइन होने के बाद भी बहुत उत्साहजनक रहा।

छात्रों ने फेस्ट में जाने पटकथा के गुण

फेस्ट के विभिन्न कार्यक्रमों में विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया

प्रियांशु गौतम

नई दिल्ली। राम लाल आनंद कॉलेज की इंग्लिश लिटरेरी सोसायटी यूबिक्विटस द्वारा लिटरेचर फेस्ट का आयोजन किया गया। फेस्ट के विभिन्न कार्यक्रमों में 3 रोमांचक प्रतियोगिताएं और एक वेबिनार शामिल था। फेस्ट 23 और 25 जनवरी को आयोजित किया गया।

वेबिनार की शुरुआत 23 जनवरी से हुई, जिसमें लेखक और निर्देशक कमलेश के. मिश्रा, आई.आई. एफ अवार्ड विजेता और मशहूर पटकथा लेखक दिलीप शुक्ला के साथ मौजूद रहे। वक्ताओं ने फिल्म लेखन और फिल्म निर्देशक पर अपनी बातें छात्रों के सामने रखी। उन्होंने फिल्म की पटकथा लेखन और फिल्म निर्देशन में अपने बहुमूल्य अनुभव और सलाह को साझा किया। वेबिनार को गूगल मीट पर आयोजित किया गया। फेस्ट में पत्र लेखन और कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। पत्र लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को अपने पसंदीदा काल्पनिक चरित्र को एक पत्र लिखना था। कविता लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को संकेत के आधार पर एक कविता गढ़नी थी। पत्र लेखन और कविता लेखन प्रतियोगिता के विजेता क्रमशः रूपाली और वैष्णवी रहे।

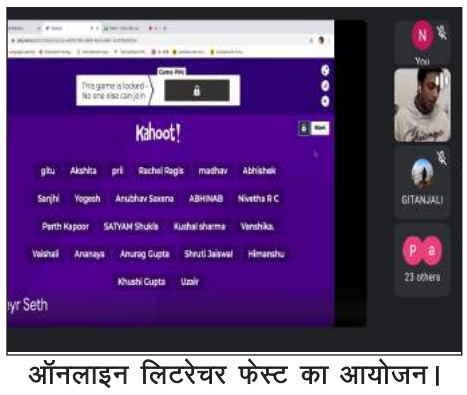

ऑनलाइन लिटरेचर फेस्ट का आयोजन।

तीसरी प्रतियोगिता एक लाइव क्विज प्रतियोगिता थी। इस क्विज ने साहित्य पर प्रतिभागियों के ज्ञान का परीक्षण किया। वेबिनार में प्रतिभागियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी से फेस्ट सफल रहा। इस फेस्ट का आयोजन सोसाइटी की समन्वयक डॉ. प्रेरणा मल्होत्रा, संयोजक डॉ. ऋतंभरा मिश्रा और सोसायटी के सभी सदस्यों ने मिलकर किया था।

हसरतें ने चेन्नई तक लहराया परचम

पूजा अग्रवाल

नई दिल्ली। हसरतें रामलाल आनंद महाविद्यालय की एक सोसायटी है। हसरतें ने 2 अक्टूबर 2020 को आकाशवाणी द रेडियो प्ले कंपटीशन में भाग लिया। जिसमें हसरतें के 'वन्स अपॉन ए नाइटमेयर' को पहले पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस नाटक में रागिनी सक्सेना और सुभग सिंह ने स्वर दिए व निर्देशन एवं संपादन रहा कृतिक वार्शने का।

इस ललकार कार्यक्रम का आयोजन एस.आर.एम यूनिवर्सिटी चेन्नई ने किया। यह कार्यक्रम ऑनलाइन था। हसरतें को यह पुरस्कार रेडियो में अच्छे पार्श्व गीत और कहानी के आधार पर दिया गया। नाटक कला ने हमेशा से ही लोगों को जागरूक करने का काम किया है। उसी प्रकार हसरतें सोसाइटी ने भी एक लंबे समय से अपने नाटकों के द्वारा समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है।

महिला दिवस के अवसर पर गूंजते कविता के स्वर

अमर केशरी

नई दिल्ली। महाविद्यालय के हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च को काव्य गोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन मोलिटिक्स (वेब पोर्टल) के सहयोग से किया गया। मोलिटिक्स की ओर से उपस्थित अर्पिता सिन्हा कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रही।

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के समन्वयक डॉ. राकेश कुमार ने बताया कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की स्थिति–सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से समान नहीं रही। आज की महिला पूरी तरह से सशक्त हैं, जिससे वह अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है।

काव्य गोष्ठी की शुरुआत हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की प्रथम वर्ष की छात्रा दीपशिखा ने मशहूर शायर मुनीर नियाजी के शेर से की–'शहर का तब्दील होना, शाद रहना और उदास, रौनकें जितनी यहाँ हैं औरतों के दम से हैं।' अन्य महाविद्यालयों के छात्रों ने भी इस प्रतियोगिता में भाग लिया। सभी छात्रों ने अपने कौशल का प्रदर्शन किया।

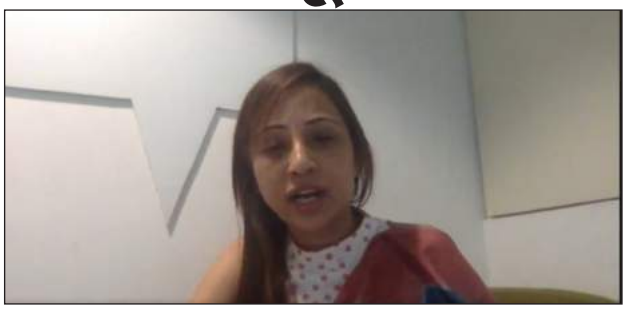

मोलिटिक्स की निर्देशक अर्पिता सिन्हा।

डॉ. अटल तिवारी, डॉ. प्रदीप कुमार और डॉ. सीमा भारती ने भी काव्य पाठ किया।

कार्यक्रम की अंतिम कड़ी में विभाग द्वारा पूर्व आयोजित फोटोग्राफी प्रतियोगिता के परिणाम भी जारी किये गए। जिसमें प्रथम स्थान महाराजा अग्रसेन कॉलेज की आकांक्षा पांडे, दूसरे स्थान पर रामलाल आनंद कॉलेज की अंजलि और तीसरे स्थान पर आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज के अंकित रहे। कार्यक्रम के अंत में विभाग के समन्वयक डॉ.राकेश कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

पाँव की ज़ंजीर न देख

प्रो. राकेश कुमार

आर.एल.ए. समाचार का यह अंक ऐसे समय में आ रहा है जब हमारी दुनिया थोड़ी थम सी गई है। विद्यार्थियों की गतिविधियों से गुलजार रहने वाले गलियारे सूने नजर आ रहे हैं। नए–नए प्रयोगों के लिए बनाई गई प्रयोगशालाएं रिक्त दिखाई दे रही हैं। कभी न थमने वाली बातों का सिलसिला भी तो कुछ रुका सा है। पर इस सब के बीच हमने नए तरीके से जीना–सोचना और आगे बढ़ना सीख लिया है। उसी का आईना है यह अंक। जो यह दर्शाता है कि रचनात्मकता–जिजिविषा और भविष्योन्मुखी दृष्टि से यदि हम अपने समय और दुनिया को देखें तो ऐसा बहुत कुछ है जिसे संजोया जा सकता है। यह अंक दिखाता है कि हम एक संस्थान के रूप में अपने समय के सबसे कठिन सवालों से किस प्रकार जूझ रहे हैं और किस प्रकार डटकर अपने समय की चुनौतियों के सामने खड़ें हुए हैं। महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग की यह कोशिश रही है कि तमाम निराशाओं और समस्याओं के बीच भी पठन–पाठन–अध्ययन और विचार की शृंखला बरकरार रहे और इस प्रयास के साक्षी रहे हैं हमारे पत्रकारिता विभाग के सक्रिय विद्यार्थी जिन्होंने इस अंक को अपने श्रम–प्रतिभा और लगन से तैयार किया है। इसी जज़्बे को देखकर मुझे मजरूह सुल्तानपुरी का एक शेर याद आ रहा है,

देख जिंदाँ से परे रंग–ए–चमन जोश–ए–बहार
रक्स करना है तो फिर पाँव की जंजीर न देख।

मानसिक स्वास्थ्य की व्यापक समस्या

विकास कुमार

वीर भोग्या वसुंधरा, ये वक्तव्य मैं काफी दिनों से सुनता आ रहा हूं। पहले मुझे लगता था कि ये गलत है, ऐसा नहीं होता और होना भी नहीं चाहिए। जैसे–जैसे जिंदगी के अनुभवों से सामना हुआ तब लगा कि हां ऐसा होता है, पर होना नहीं चाहिए। ये दुनिया एक जंगल है। यहां जीवनयापन के लिए वीर होना अनिवार्य है। मेरी बातें आप शारीरिक स्वास्थ्य के बाहरी संदर्भ में समझेंगे लेकिन यह बात है उस अंग की जिसकी वजह से आपकी सभी शारीरिक क्रियाओं का संचालन होता है। हमारा मस्तिष्क चीजों को जानने, समझने, जांचने की क्षमता देता है। मानसिक स्वास्थ्य शब्द आप हमेशा सुनते होंगे पर कभी इससे जुड़ी बातों को जानने की उत्सुकता दिखाई है आपने? नहीं! यही तो नाकामी है हमारी।

डब्ल्यूएचओ की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की 7.5 प्रतिशत आबादी मानसिक अवसाद से गुजर रही है। उनका यह भी मानना था कि 2020 में यह आबादी बढ़कर 20 प्रतिशत हो जाएगी, अब तो हो भी गई होगी। रोगियों की इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद इसकी उपेक्षा की जा रही है। कुछ रूढ़िवादी लोग तो इसे काल्पनिक मानते हैं। गांव में यह मामला चरम पर है। मानसिक रोगी से ग्रस्त लोगों को ग्रामीण इलाकों में पागल मान लिया जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य के बढ़ते मामलों की बढ़ी वजह है बढ़ती आबादी। जनसंख्या के कारण संसाधन का बंटवारा होना व अवसर पाने के लिए प्रतियोगिताओं में बकरों की तरह बलि चढ़ाने, बेरोजगारों में मानसिक अवसाद की सबसे बड़ी वजह है। लोगों में अब धैर्य नहीं रह गया। छोटी–छोटी बातों पर हम झगड़ने लगते हैं। कामों में इतना व्यस्त रहते हैं कि परिवार और दोस्तों को समय नहीं दे पाते। यहां तक कि खुद के लिए भी समय नहीं होता। अपनी–अपनी दुनिया में सिमट जाने के कारण हमारे अंदर गुस्सा और चिढ़–चिढ़ा पन बढ़ रहा है। बीते दिनों मानसिक अवसाद की बातें सोशल मीडिया पर उठी है। बहुत सारे मामलों पर बहस और संवाद हुए है। लेकिन एक हिस्सा वह भी था जो लोगों को अपनी परेशानी के बारे में बात करने को प्रेरित कर रहा था। इसे मान. सिक स्वास्थ्य से लड़ने का सबसे सरल उपाय माना जा सकता है। हम बात करके जीवन की हर समस्या को सुलझा सकते हैं।

हमारी बातों में पहाड़

श्रुति गोयल

किताबों का शौक है? वेद ने पूछा। बहुत, मेरे पास पुरानी से पुरानी किताबें भी मिल जाएंगी। माया और वेद पहली बाद मिल रहे थे। तो क्या आप हर साल गांव जाते हैं? माया ने पूछा। हर साल तो कहां हो पाता है पर 3–4 साल में एक बार। वेद ने बताया। हर बार पहले से कुछ अलग लगता है? नहीं, सब कुछ वही रहता है। पेड़, खेत, नदी सिवाय लोगों के। मतलब? हमारे और आपके जैसे ही लोग होते हैं जो भरे पूरे घर को खाली मकान कर देते हैं। अब देखिए न, हम दिल्ली में बैठकर गांव की बातें कर रहे हैं। तीन आप चाय लेना पसंद करेंगी या कॉफी? वेद ने रसोई में जाते हुए पूछा। कॉफी...पर गांव में सुविधाएं भी तो नहीं हैं? इसी कारण लोग यहां आ जाते हैं। मैंने भी यही सोचा था। पर आज बहुत बार पीछे देखने पर यह भी लगता है कि सही प्रश्न नहीं उठाया। एक तरफ चाय चढ़ाकर वेद कॉफी फेंट रहा था। सही प्रश्न? माया के माथे पर लकीरें पड़ते हुए। क्या गांव देहात में सुविधाएं है नहीं या हो भी नहीं सकती? जिम्मेदारी लेना किसे पसंद है? हम सब बहुत जल्दी में हैं। पल दो पल तो ठहर सकते हैं न? चाय की खुशबू रसोई से बाहर तैरने लगी। वेद एक गिलास में चाय लाया और दूसरे कप में कॉफी। आपको बुरा न लगे तो मैं चाय ले सकती हूं? आपको कॉफी पीनी पड़ेगी। वेद ने माया की तरफ चाय का गिलास कर दिया।

शिक्षा का बदलता स्वरूप

मानषी बिष्ट

देश में शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन क्रांति लाने का श्रेय बहुत हद तक कोरोना वायरस को जाता है। पाठ्यक्रम की निरंतरता बनाए रखने और लॉकडाउन के बाद आसान शुरुआत के लिए स्कूल–कॉलेजों, तकनीकी संस्थानों और यहां तक कि कोचिंग सेंटरों ने भी ऑनलाइन कक्षाएं शुरू कर दी हैं। देश भर के लाखों छात्र हर रोज जूम से लेकर गूगल मीट तक कई प्लेटफॉर्म के जरिए वर्चुअल क्लासरूम से जुड़ रहे हैं। ऑनलाइन होमवर्क दिए और दिखाए जा रहे हैं। उनका मूल्यांकन हो रहा है और परीक्षाएं भी ली गई हैं।

ऑनलाइन शिक्षा बाजार के लिए अनुमान था कि 2021 तक उसका इस्तेमाल करने वाले 96 लाख हो जाएंगे और कारोबार 1.96 अरब डॉलर (14,836 करोड़ रु.) का हो जाएगा, पर यह लक्ष्य 2020 में ही हासिल हो गया। केंद्र सरकार भी ऑनलाइन पढ़ाई को बढ़ावा दे रही है। उसने पीएमईविद्या कार्यक्रम लॉन्च किया है। यह मल्टी–मोड डिजिटल ऑनलाइन लर्निंग मंच टीवी चैनलों, कम्युनिटी रेडियो और पॉडकास्ट के जरिए चलता है।

कार्टून : विकास त्रिपाठी

कोरोना के बाद और मौजूदा समय में ऑनलाइन शिक्षा बाजार के लिए अनुमान था कि 2021 तक उसका इस्तेमाल करने वाले 96 लाख हो जाएंगे और कारोबार 1.96 अरब डॉलर (14,836 करोड़ रुपए) का हो जाएगा, पर यह लक्ष्य 2020 में ही हासिल हो गया। केन्द्र की सरकार भी ऑनलाइन पढ़ाई को बढ़ावा दे रही है...

हालांकि ऑनलाइन पढ़ाई के आड़े डिजिटल पहुंच की खाई आ रही है। कई सर्वे से पता चलता है कि छात्रों के घरों में गैर–भरोसेमंद कनेक्टिविटी और बिजली आपूर्ति ऑनलाइन पढ़ाई के लिए दिक्कत बन सकती है। दिल्ली विश्वविद्यालय कैंपस मीडिया प्लेटफॉर्म पर 35 कॉलेजों के 12,214 छात्रों के एक ऑनलाइन सर्वे में पाया गया कि 85 फीसद छात्र ऑनलाइन परीक्षा के खिलाफ हैं, 75.6 फीसद छात्रों के पास क्लास या परीक्षा के लिए लैपटॉप नहीं हैं, जबकि 79.5 फीसद ने कहा कि उनके पास ब्रॉडबैंड कनेक्शन नहीं हैं। तकरीबन 65 फीसद ने कहा कि उनके पास स्थाई मोबाइल नेटवर्क कनेक्शन नहीं है जबकि लगभग 70 फीसद का दावा था कि उनके घर में ऑनलाइन परीक्षा के लिए माहौल नहीं है।

ऑनलाइन क्लास के कुछ अच्छे पहलू भी हैं। यह तकनीक की मदद से पढ़ाई के नवीन तरीकों को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है, छात्रों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों द्वारा तैयार सर्वश्रेष्ठ सामग्री तक पहुंचने में मदद मिल सकती है, अपनी गति से सीखने का अवसर मिलता है, एक ही समय पर एक साथ बहुत से विद्यार्थियों तक पंहुचा जा सकता है, आभासी दुनिया की गुमनामी के कारण साथियों के दबाव से राहत रहती है और तनाव मुक्त वातावरण हो जाता है तथा यह नियमित कैंपस की पढ़ाई वाली डिग्री से बहुत ज्यादा कम खर्चीला है।

ऑनलाइन पढ़ाई कई जगहों पर नाकाम भी नजर आती है। वर्चुअल लर्निंग और शिक्षण के लिए समय और अभ्यास दोनों की जरुरत होती है, जो अचानक आई महामारी में सही से मिल नहीं सका। स्कूली माहौल से अलग होने से ऑनलाइन क्लास में इधर–उधर की चर्चा और बहसें शुरू हो जाती हैं। घरेलू माहौल विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों के लिए भटकाव पैदा कर देता है। ऑनलाइन पढ़ाई में सब कुछ इंटरनेट, बिजली और डिजिटल डिवाइस की उपलब्धता पर निर्भर है, आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के और दूरदराज के क्षेत्रों के छात्रों के पास अक्सर तीनों में सें कोई साधन नहीं होता। स्क्रीन के सामने ज्यादा समय बिताने सें शारीरिक और मानसिक आघात लग सकने का खतरा रहता है।

यह कहा तो जा सकता है कि कोविड–19 की वजह से ऑनलाइन शिक्षा ने भारत में रफ्तार पकड़ी है, मगर इसे कामयाब बनाने के लिए कस्टमाइज ऑनलाइन लर्निंग मॉड्यूल और ज्यादा मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे की सख्त जरुरत है।

पहाड़ों पर विकास और पर्यावरण संरक्षण की जरूरत

मनोज थायट

विकास किसी भी समाज की प्रगति और बेहतर सुविधाओं के लिए किया जाता है। क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि किसी क्षेत्र का विकास उस क्षेत्र के लोगों और प्रकृति के लिए आफत बना हो? विकास शब्द का सामान्य अर्थ प्रगति, अच्छा जीवन, कल्याण, बेहतर सुविधाएं आदि से है। विकास समाज के सभी पहलुओं और प्रत्येक नागरिक से संबंधित है। पहाड़ी क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों के भंडार हैं। भारत के 12 उत्तर–पूर्वी राज्य हिमालयी क्षेत्र में आते हैं। संसाधनों के भंडारों को लूटने के लिए विकास को माध्यम बनाया गया और पहाड़ी लोगों के लिए दावत में तबाही को परोसा गया।

भौतिक संसाधनों की अनंत लालसाओं को पूरा करने के लिए अब दोहन नहीं बल्कि विदोहन हो रहा है। प्रकृति ने मानव को तोहफे के रूप में जल, जंगल, जमीन, प्राकृतिक संसाधन, शुद्ध वायु, वनस्पति, पेड़–पौधे आदि दिया। साथ ही मानव को प्रकृति ने कुछ नैतिक जिम्मेदारियां भी दी कि वह पेड़–पौधों, वनस्पतियों और वन्य प्राणियों की रक्षा भी करेगा। मानव ने स्वयं को सर्वोपरि मान लिया है और जिम्मेदारियों को द्वितीय। कमोबेश वर्तमान स्थिति यह है कि पर्यावरण के संसाधन अपने मूल रूप में रह ही नहीं गए हैं। इसी का परिणाम है कि समय–समय पर आपदाओं में मानवीय त्रासदी हो रही है। पर्यावरण संरक्षण की बड़ी–बड़ी बातें बड़े–बड़े होटलों के सभागारों में चाय–समोसा तक ही रह जाती है।

उत्तर भारत के पर्वतीय राज्य उत्तराखंड को केंद्र में रखकर पहाड़ों पर विकास को आसानी से समझा जा सकता है। 9 नवंबर 2000 को संयुक्त राज्य उत्तर प्रदेश से अलग होकर भारत का 27वां राज्य उत्तराखंड. बना। इस राज्य को बनाने का मूल उद्देश्य यही था कि संयुक्त राज्य उत्तर प्रदेश से पर्वती भाग को अलग कर दिया जाए। राज्य क्रांतिकारियों की भी मांग कुछ यही थी। नया राज्य बना तो पहाड़ों पर विकास और अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के लिए मनमाने तरीके से डायनामाइट के भीषण विस्फोटों से पहाड़ों को तोड़कर सड़कें बनाई जाने लगी। इस बात को नजरअंदाज किया गया कि मध्य हिमालय कच्चे और नाजुक पहाड़ों से बना है। टूटते पहाड़ों के कारण मिट्टी की बुनियाद कमजोर होते हुए सतह को छोड़ने लगी और आए दिन भूस्खलन जैसी घटनाएं पहाड़ में होने लगी। बड़े–बड़े पहाड़ों को काटकर और गांव को खाली करके बांध बनाए जाने लगे। पहाड़ों को तोड़कर पत्थर और नदियों से बजरी (रेत) अत्यधिक मात्रा में निकाली जाने लगी। परिणाम, पहाड़ कमजोर होने लगे। विकास के नाम पर उत्तराखंड राज्य में पेड़ों की कटाई के आंकड़ों के लिए शायद पुस्तकें कम पड़ जाएं। राज्य में पर्यटन रोजगार का प्रमुख जरिया है किंतु अब स्थिति यह है कि पर्यटन स्थलों पर निर्माण, प्लास्टिक, वाहनों ने उन्हें भी अशुद्ध कर दिया है।

पहाड़ और पठार में अंतर होता है, दोनों के विकास के मानकों में भी अंतर होना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि पठार के विकास मानकों को पहाड़ों पर भी लागू किया जाता है, जो बाद में पहाड़ के उन स्थानीय लोगों के लिए मुसीबतों का पहाड़ बनकर उन पर गिरते हैं। समाधान यही है कि पहाड़ के लिए विकास मानक तय किए जाएं और विकास के नाम पर पहाड़ों को तबाह करने से पहले उन लोगों के बारे में भी सोचना चाहिए जिनके वो घर है।

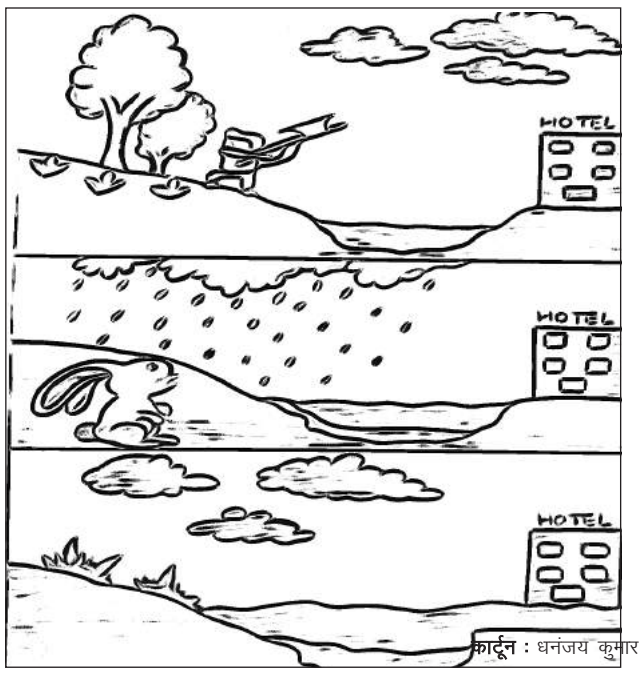

कार्टून : धनंजय कुमार

गांधीवादी दृष्टि से हो आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना

दो–दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस में विद्वानों ने आत्मनिर्भर भारत को गांधी के मूल्यों पर परखा

गीतू कत्याल

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के गांधी स्टडी सर्कल द्वारा 28 और 29 सितम्बर 2020 को दो दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का विषय आत्मनिर्भर भारत एक गांधीवादी दृष्टिकोण था। गुजरात विद्यापीठ और रामलाल आनंद कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान से आयोजन को गूगल मीट पर संचालित किया गया।

कॉन्फ्रेंस की अध्यक्षता गांधी स्टडी सर्कल के संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार और सह–समन्वयक डॉ. सुभाष चंद्र डबास ने की। नेशनल कॉन्फ्रेंस को चार सत्र में विभाजित किया गया।

पहले सत्र का आरम्भ रामलाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ राकेश कुमार गुप्ता ने शुभारम्भ भाषण देते हुए किया। इस सम्मेलन में गांधी स्टडी सर्कल ने पूर्व इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस पर आधारित गांधी एक्रॉस दी बाउंड्री नामक पुस्तक का विमोचन किया। प्रोफेसर अनामिका शाह ने गांधी और आत्मनिर्भरता की संकल्पना विषय पर अपना वक्तव्य पेश किया।

दूसरे सत्र का आरम्भ भावनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर विद्युतभाई जोशी ने किया। उनका विषय इक्कीसवीं शताब्दी में स्वावलंबन का स्वरूप था। इसके बाद इंडियन सोसाइटी ऑफ कम्युनिकेशन की ट्रस्टी मंदाबेन पारेक ने महिला स्वयं सहायक समूह एवं आत्मनिर्भरता विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

तीसरे सत्र की शुरुआत प्रोफेसर सत्यकाम जोशी ने की। उनका विषय आदिवासी उत्कर्ष और गांधी का स्वावलंबन था।

समापन सत्र में डॉ. राजेन्द्र खिमानी गुजरात विद्यापीठ के डायरेक्टर ने ग्रामीण भारत, कृषि और स्वावलंबन विषय पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का समापन गांधी स्टडी सर्कल के सह–समन्वयक डॉ. सुभाष चंद्र डबास ने सबका आभार प्रकट करते हुए किया। वहीं 2019–2020 के सत्र में राम लाल आनंद महाविद्यालय के गांधी स्टडी सर्किल ने दिल्ली विश्वविद्यालय के 52 महाविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। स्क्रीनिंग कमेटी द्वारा इसका चयन किया गया जिसमें संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार और छात्र अध्यक्ष दीपक कुमार त्रिवेदी को गांधी भवन द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

कॉर्पोरेट जगत के लिए तैयार होते विद्यार्थी

प्रीति

नई दिल्ली। आज की डिजिटल दुनिया में वेबसाइट निर्माण करना एक बड़ी कला मानी जा रही है। इस बात को समझते हुए राम आनंद महाविद्यालय की बीए प्रोग्राम समिति ने फुल स्टैक वेब डेवलपमेंट एंड होस्टिंग सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया। तीन माह तक चलने वाले इस कोर्स में छात्रों को एक वेबसाइट बनाना और उसे ऑनलाइन होस्ट करना सिखाया।

कोर्स की शुरुआत 23 जनवरी को ऑनलाइन की गई। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए बीए प्रोग्राम समिति के संयोजक डॉ कृष्ण गोपाल त्यागी ने कहा कि इस कोर्स की आज के दौर में अत्यधिक आवश्यकता है।

वेबसाइट निर्माण के कौशल को सीख कर छात्र कॉर्पोरेट दुनिया में अपनी पहचान बना सकते हैं। इस कोर्स की संयोजक नूपुर त्यागी थीं। नूपुर त्यागी ने छात्रों को कोर्स के बारे में बताया कि यह कोर्स सात भागों में बंटा हुआ है, जिसमें एचटीएमएल, सीएसएस और जावास्क्रिप्ट जैसे कई सॉफ्टवेयर सिखाए गये। 30 घंटों के इस कोर्स की क्लास हर शनिवार को हुई। कोर्स में रामलाल आनंद महाविद्यालय के छात्रों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। शिक्षा को मद्देनजर रखते हुए इस कोर्स को निशुल्क रखा गया था। कोर्स की समाप्ति 27 मार्च को हुई।

अनुवाद में रोजगार के अवसर

पुष्पेंद्र

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय एवं भारतीय अनुवाद परिषद के तत्वावधान में अनुवाद प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम की शुरुआत 23 जनवरी 2021 को हुई। यह पाठ्यक्रम 30 घंटे की अवधि का था। इस पा. ठ्यक्रम के संरक्षक प्राचार्य डॉ. राक. श कुमार गुप्ता एवं इसकी संयोजक हिंदी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नीलम ऋषिकल्प थीं।

आज अनुवाद का महत्व बहुत बढ़ गया है। आज विश्व भर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है। इस पाठ्यक्रम में सभी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने के लिए भारतीय अनुवाद परिषद् के प्रोफेसर डॉ. पूरन चंद टंडन को बुलाया गया था। उन्होंने बताया कि आज मीडिया जगत में भी अनुवाद का बहुत महत्व बढ़ गया है।

कार्यशाला में दिखी मिथिला की कहानियां

प्रतिभागियों ने लोककथाओं पर आधारित कलाकृतियों को बनाना सीखा

प्रीति

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की स्पिक मैके सोसायटी ने मधुबनी पेंटिंग की कार्यशाला आयोजित की। वास्तुकार और मैथिली चित्रकार मनीषा झा इस कार्यशाला की मुख्य अतिथि रहीं। इस तीन दिवसीय कार्यशाला की शुरुआत 25 फरवरी को हुई।

कार्यशाला की शुरुआत स्पिक मैके के शिल्प अधिकारी नीरजा सरीन ने की। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने काम के बारे में समझाते हुए मनीषा झा का परिचय करवाया। साथ ही प्रतिभागियों को मैथिली पेंटिंग और इसमें व्यवसाय के अवसरों के बारे में अवगत करवाया।

मनीषा झा ने प्रतिभागियों को मैथिली भरनी अंदाज में मछली बनाना सिखाया। प्रतिभागियों को

प्रसिद्ध मधुबनी कलाकर मनीषा झा।

प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल भी बताया। मनीषा झा ने सूर्य देव और देवी काली की विशेषता का वर्णन किया। उन्होंने देवी काली और राक्षस रक्तबीज की कथा का वर्णन किया। इन कहानियों से सत्र और भी रोचक हो गया। प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उन्होंने मैथिली पेंटिंग के तीसरे प्रकार को बताते हुए गोइदाना स्टाइल को भी समझाया। मनीषा झा ने गोइदाना स्टाइल के बारे में बताया कि वो मोर के आकार में बनता है। उन्होंने कहानियों के जरिए मैथिली कला की कई कलाकृतियों का परिचय दिया। इसमें धार्मिक विषयों के साथ–साथ सामाजिक विषयों पर आधारित कलाकृतियां भी शामिल रही।

मनीष झा ने कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों को मधुबनी कला को प्रचारित– प्रसारित करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि वह भी अन्य कलाकारों को देख कर ही प्रेरित हुई थी, इस क्रम को आगे बढ़ाना हम सभी का कर्तव्य होना चाहिए।

मधुबनी पेंटिंग कार्यशाला में लगभग 70 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। स्पिक मैके सोसाइटी की संयोजक उर्वशी कुहाड़ ने कार्यशाला की प्रशिक्षक मनीषा झा का धन्यवाद ज्ञापन किया। साथ ही विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया।

सौरभ ने बताया, पत्रकारिता कैसे करें

शिल्पी

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 22 सितंबर 2020 को प्लेसमेंट और करियर काउंसिलिंग सोसाइटी की ओर से 'करियर इन मीडिया' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पत्रकारिता जगत की जानी–मानी हस्ती और द लल्लनटॉप के फाउंडर संपादक सौरभ द्विवेदी आए। कार्यक्रम का संचालन सीमा गुप्ता और डॉ. दिनकर सिंह द्वारा किया गया। वेबिनार की शुरुआत डॉ. दिनकर सिंह ने मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ की। वेबिनार में सौरभ द्विवेदी ने

सौरभ द्विवेदी

पत्रकारिता की मांग

1. अनुवाद की अच्छी जानकारी होनी चाहिए
2. हिंदी और इंग्लिश टाइपिंग की अनिवार्यता
3. आप जो भी पढ़िए उसकी पूरी मुकम्मल जानकारी रखिए

विद्यार्थियों को पत्रकारिता जगत की बारीकियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा पत्रकारिता जगत में रोजगार पाने के लिए विद्यार्थियों को अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं का ज्ञान होना जरूरी है। आप जो भी पढ़ें उसकी सारी जानकारी रखें। अगर आप साहित्य की फील्ड में नाम कमाना चाहते हैं तो आपको साहित्य के बारे में हर छोटी से बड़ी जानकारी होनी चाहिए। सौरभ ने बताया कि ट्रांसलेशन विद्यार्थियों के लिए पत्रकारिता जगत में सफल होने के लिए बहुत मददगार साबित होता है। सेमिनार का समापन विद्यार्थियों के प्रश्न और सौरभ द्विवेदी के जवाबों के साथ हुआ।

ऑनलाइन रंगमंच पर दिखा छात्रों का उत्साह

श्रुति गोयल

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की हसरतें (नाट्य कला) सोसायटी द्वारा 2 से 4 अक्टूबर तक एक तीन दिवसीय अंतर कॉलेज रंगमंच कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन किया गया। अवतार साहनी और विपिन कुमार कार्यशाला के परामर्शदाता थे। कार्यशाला का आयोजन सोसायटी की अध्यक्ष रागिनी सक्सेना और संयोजक डॉ. वंदना गंडोत्रा के नेतृत्व में हुआ। प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता एवं अन्य शिक्षक सदस्यों के साथ दीपशिखा कुमारी, डॉ. प्रभाष पांडे और डॉ. सुधा चौधरी भी इस पूरे कार्यक्रम में जुड़े रहे।

इस तीन दिवसीय कार्यशाला में न केवल रामलाल आनंद महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया बल्कि आर्यभट्ट कॉलेज, हिंदू कॉलेज, पीजीडीएवी कॉलेज, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, डीपीएसएआर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, जयपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय आदि अन्य महाविद्यालयों के भी बहुत से प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सभी प्रतिभागियों ने अद्भुत विचारों से कार्यशाला को मजेदार और परस्पर संवादात्मक बनाने में सहयोग दिया। प्रतिभागियों ने प्रत्येक सत्र के 12 घंटे के भीतर

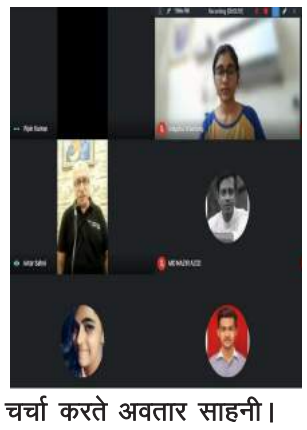

चर्चा करते अवतार साहनी।

आयोजकों और सलाहकारों को अपना कार्य भेजा, जिसके बाद में अवतार साहनी और विपिन कुमार द्वारा उसकी समीक्षा की गई। यह कार्यक्रम बेहद सफल और लाभदायी रहा। उन सभी छात्रों के लिए जो आगे चलकर नाटक या फिल्मों में अपना करियर बनाना चाहते हैं। इस आयोजन के लिए 146 प्रतिभागियों ने इसमें अपना पंजीकरण कराया। जिसमें से 59 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में तीनों दिन भाग लिया। कार्यशाला का आयोजन गूगल मीट पर किया गया। यह कार्यक्रम सफल और लाभदायी रहा।

फेक न्यूज चेक करने का तरीका सीखा

विशेषज्ञ गीतिका वशिष्ठ ने फेक न्यूज के प्रति विद्यार्थियों को किया प्रशिक्षित

रक्षा रावत

नई दिल्ली। राम लाल आंनद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने फेक न्यूज पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। यह आयोजन 19 दिसंबर 2020 को 12 से 2 बजे तक चला। पत्रकारिता सहित महाविद्यालय के सभी विभागों के विद्यार्थियों ने इसमें काफी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इस आयोजन की मुख्य अध्यक्ष गीतिका वशिष्ठ थीं, जो फैक्टशाला के लिये एक ट्रेनर एवं मीडिया शिक्षक के रूप में कार्य कर रही हैं।

यह कार्यशाला फैक्टशाला मीडिया लिटरेसी एवं डेटा लीडस् के संयुक्त प्रयास के कारण संपन्न हो पाई। गीतिका वशिष्ठ ने छात्रों से फेक न्यूज के विषय पर चर्चा की और बताया कि समाज में इसका क्या प्रभाव है, तथा यह कितनी गति से आगे बढ़ रही है। उन्होंने फेक न्यूज के दूरगामी परिणामों के विषय में छात्रों को सूचित किया तथा इसके महत्व को विस्तार में छात्रो के समक्ष रेखांकित किया।

उन्होंने बच्चों से कुछ प्रश्न भी किए जो खबर की सच्चाई को

फैक्ट चेकिंग

1. रिवर्स गूगल सर्च की मदद
2. वीडियो के हर फ्रेम देखना
3. कीवर्ड गूगल सर्च करना
4. फैक्ट चेक वेबसाइट की मदद लेना...

पकड़ने के क्रम में मददगार साबित हो सकते हैं। अलावा इसके उन्होंने बच्चों के साथ कुछ आनलाइन गतिविधियों का आयोजन किया। विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यशाला का अंत किया।

डॉ. अनिल कुमार के साथ यूनियन बजट पर चर्चा

गुंजन

नई दिल्ली। यूनियन बजट पर चर्चा के लिए रामलाल आनंद महाविद्यालय की बीए प्रोग्राम सोसायटी और इकोनॉमिक्स विभाग ने 11 फरवरी को एक वेबिनार का आयोजन किया। चर्चा के लिए श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार को आमंत्रित किया गया। उन्होंने इस बजट का प्रभाव समाज के अलग क्षेत्रों पर कैसा रहेगा, इसके बारे में भी बताया।

एनसीसी कैडेट उज्ज्वल शर्मा को मिला प्रथम स्थान

एनसीसी के कैडेट्स को लाल किले पर ध्वजारोहण समारोह का हिस्सा बनने का अवसर मिला

मंटू

नई दिल्ली। महाविद्यालय में 20 अगस्त को एक भारत श्रेष्ठ भारत कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें जेयूओ उज्ज्वल शर्मा ने आंध्र प्रदेश और तेलंगाना निदेशालय और दिल्ली निदेशालय के बीच ऑनलाइन 'एक भारत श्रेष्ठ भारत शिविर' में भाग लिया। इसमें उज्ज्वल शर्मा को प्रथम पुरस्कार भी मिला।

27 अगस्त को एसयूओ ऋतिक सिंह और जेयूओ राहुल आनंद ने रक्षामंत्री राजनाथ सिंह द्वारा डीजी एनसीसी प्रशिक्षण ऐप लॉन्च समारोह में भाग लिया। 18 अक्टूबर को आरएलए एनसीसी ने "राष्ट्रीय एकता में एनसीसी की भूमिका" पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें सेना के बड़े–बड़े अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल सतीश दुआ, एल. मार्शल नरेश वर्मा, मेजर जनरल विक्रम डोगरा, मेजर जनरल दीलावर सिंह, कर्नल सोनम वांग्चुक, कर्नल अनूप अवस्थी व इस आयोजन से कुल 700 दर्शक जुड़े थे। 12 नवंबर को कैडेट्स ने यातायात जागरूकता सप्ताह मनाया। जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से पोस्टर और बैनर के साथ कॉलेज के पास विभिन्न यातायात संकेतों के बारे में बताया। 18 दिसंबर को संविधान दिवस वीडियो मेकिंग

कैडेट उज्ज्वल शर्मा

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए श्री राजनाथ सिंह (माननीय रक्षा मंत्री) द्वारा सीडीटी चिराग शर्मा की सराहना की गई। 1 दिसंबर को एनसीसी ग्रुप–सी मुख्यालय सफदरजंग में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। सीडीटी शिवा शर्मा ने रक्तदान के लिए स्वेच्छा से सहयोग किया। 8 दिसंबर को आरएलए के कैडेटों ने अपने इलाके की सफाई के लिए स्वेच्छा से काम किया और आसपास के क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा दिया। उन्होंने जागरूकता फैलाने के लिए पोस्टर बनाए व स्वच्छता का महत्व बताया। 11 जनवरी 2021 को एनसीसी का परीक्षण सत्र 2020–21 के लिए कॉलेज में ऑफलाइन आयोजित किया गया था, जिसमें एसोसिएट एनसीसी अधिकारी कैप्टन डॉ. संजय कुमार शर्मा व पीएस टफ की उपस्थिति में परीक्षण बौद्धिक लिखित और साक्षात्कार के तीन स्तर शामिल थे। राजपथ सैनिटाइजेशन अभियान में 18 जनवरी से 31 जनवरी तक इस शिविर में भाग लेने वाले कैडेट्स ने स्वास्थ्य के बारे में नुक्कड़ नाटक, कविता व स्लोगन के माध्यम से जागरूकता बढ़ाई।

25 जनवरी को एनसीसी ने शिक्षण और गैर शिक्षण कर्मचारियों के साथ गणतंत्र दिवस मनाया। ध्वजारोहण समारोह प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता व कैप्टन डॉ. संजय कुमार शर्मा के द्वारा किया गया। 3 फरवरी से 8 फरवरी तक बी और सी सर्टिफिकेट परीक्षा के लिए 7 डीबीएन यूनिट द्वारा सीएटीसी कैंप का आयोजन किया गया था। शिविर में आरएलए के सभी कैडेट्स ने हिस्सा लिया।

रामलाल आनंद महाविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने बढ़ाया महाविद्यालय का मान।

प्रतियोगियों ने अभिव्यक्ति को शब्दों में पिरोया

ग्रेसी अरोड़ा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की रचनात्मक लेखन सोसाइटी अभिव्यक्ति ने रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया।

30 जनवरी को आयोजित इस प्रतियोगिता में अनेक महाविद्यालयों के 80 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता को ऑनलाइन माध्यम पर आयोजित किया गया। लेखन प्रतियोगिता के पहले दौर में दो लघु वीडियो दिखाए गए। प्रतिभागियों को दो वीडियो में से किसी एक के वीडियो आधार पर 500–600 शब्दों का एक लेख लिखना था। लेखकों को अपनी रचनाएं लिखने के लिए लगभग डेढ़ घंटे का समय दिया गया था। पहले दौर के परिणाम दोपहर में लगभग 4 बजे घोषित किए गए। दूसरे दौर में प्रतियोगियों को अपने लेख का वर्णन करने के लिए कहा गया, जिससे उनके कौशल और अभिव्यक्ति करने की क्षमता का अंदाजा लगाया जा सके। प्रतिभागियों ने कई रोचक रचनाएं प्रस्तुत कीं।

दूसरे राउंड की समाप्ति के बाद दो विजेताओं के नाम घोषित किए गए। हिंदी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं में विजेताओं का पृथक चुनाव हुआ और उन्हें नकद पुरस्कार और ई–प्रमाण पत्र भी दिए गए। अंग्रेजी का प्रथम पुरस्कार रिशिका कश्यप और द्वितीय पुरस्कार सोमी सेंघल ने जीता। हिंदी में शुधांशू मिश्रा प्रथम, जबकि आयुश कुमार पाल द्वितीय पुरस्कार के विजेता बने। प्रतिभागियों ने प्रतियोगिता के सुचारू संचालन में आयोजकों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं महिलाएं

'अपनी लक्ष्मी' वेबिनार ने विद्यार्थियों को किया वित्तीय रूप से स्वतंत्र और जागरुक

निक्की, भूमि

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की महिला कल्याण सलाहकार समिति की ओर से लोगो बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अक्तूबर 2020 में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। सभी विद्यार्थियों ने अपने रचनात्मकता और कलात्मक कौशल का प्रदर्शन किया।

वेबिनार में विद्यार्थी और शिक्षक।

समिति ने 10 अक्टूबर 2020 को विजेता का नाम घोषित किया। इस प्रतियोगिता की विजेता बीए हिस्ट्री ऑनर्स दूसरी वर्ष की अनिशा कुमारी रहीं। कार्यक्रम को सभी विद्यार्थियों ने बहुत पसंद किया। समिति ने आश्वासन दिया कि ऐसी प्रतियोगिता हर वर्ष रखी जाएगी तथा जागरूकता अभियान ऐसे ही चलता रहेगा। महिला कल्याण सलाहकार समिति का काम लड़कियों को उनके अधिकारों और सामाजिक मुद्दों से अवगत करवाना है। जागरुकता की इस कड़ी में समिति ने एक वेबिनार का आयोजन भी किया। महामारी की बाधाओं के कारण वेबिनार का आयोजन जूम एप पर 8 मार्च 2021 में किया गया। इस वेबिनार में वित्तीय स्वतंत्रता के संदर्भ में बच्चों को साक्षर किया गया। साक्षरता कार्यक्रम का नेतृत्व शिखा मित्तल ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों को वित्तीय साक्षरता, वित्तीय बचत, वित्तीय स्वतंत्रता और वित्तीय बीमा के बारे में शिक्षित किया।

सत्र के अंत तक सभी विद्यार्थियों को आर्थिक सुरक्षा का महत्व समझ आ गया। साथ ही विद्यार्थियों ने जाना कि अपने वित्तीय संसाधनों का उपयोग कैसे करना है। इस वेबिनार में विद्यार्थियों ने प्रभावी निर्णय लेने के गुण भी सीखे। यह वेबिनार उनके आर्थिक सशक्तिकरण की नींव रखने में एक अहम भूमिका निभाएगा।

प्राचीन नाटकों से अवगत हुए छात्र

शिवशंकर

नई दिल्ली। रामलाल आनंद कॉलेज की अंग्रेजी साहित्यिक सोसायटी यू–बिक्विटस द्वारा 8 और 9 फरवरी को प्राचीन भारतीय नाटक और रास थ्योरी के सिद्धांतों पर दो दिवसीय वेबिनार आयोजित किया गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर वोकेशनल स्टडीज में पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर भरत गुप्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। प्रोफेसर गुप्त ने यूरोपीय और भारतीय नाटक में अपने ज्ञान के साथ–साथ अपनी संरचना से दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। रास और प्राचीन नाटक के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने वेबिनार का ध्यान अपनी ओर खींचा। दो दिवसीय कार्यक्रम 200 से अधिक प्रतिभागियों को आकर्षित करने में कामयाब रहा। सत्र के बाद दर्शकों ने सक्रिय रूप से चर्चा में भाग लिया, जिससे यह कार्यक्रम और भी आकर्षक हो गया। इसके बाद एक प्रश्न और उत्तर का दौर था, जहां प्रोफेसर भरत गुप्ता ने सभी प्रश्नों का उत्तर दिया।

सभी प्रतिभागियों को ई–प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। इस आयोजन का सफल संचालन इंग्लिश लिटरेरी सोसाइटी की संयोजक डॉ. प्रेरणा मल्होत्रा, समन्वयक डॉ. ऋतंभरा मिश्रा और सोसाइटी के अन्य सदस्यों के कारण हो सका।

किताबों तक सीमित नहीं पत्रकारिता

मीडिया प्रोडक्शन के लिए एडिटिंग सॉफ्टवेयर कोर्स का आयोजन

शिवानी मिश्रा

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा एडिटिंग सॉफ्टवेयर कोर्स की सफल कार्यशाला का आयोजन हुआ। यह कार्यशाला गूगल मीट पर 20 जनवरी से 20 फरवरी 2021 तक चली। कार्यशाला के संरक्षक प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, प्रभारी डॉ. सुभाष चंद्र डबास, संयोजक डॉ. राकेश कुमार, व पाठ्यक्रम सह–समन्वयक डॉ. प्रदीप कुमार रहे। इसके अतिरिक्त छात्र समन्वयक के रूप में विकास त्रिपाठी (द्वितीय वर्ष), गीतू कत्याल (द्वितीय वर्ष) व प्रथम वर्ष से समीरा और रक्षा रावत मौजूद रहीं।

आज के समय में मीडिया उद्योग में किताबी ज्ञान के साथ ही साफ्टवेयर का उपयोग करना आना भी जरूरी है। इसी धारणा के साथ प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। पांच मुख्य सॉफ्टवेयर के तौर पर एडोब प्रीमियर प्रो, कोरल ड्रॉ, एडोब फोटोशॉप, क्वार्क एक्सप्रेस और एडोब ऑडिशन को रखा गया। सॉफ्टवेयर्स का प्रशिक्षण संदीप संजू तिलवारी, दीपक त्रिवेदी, असमा बानो और डॉ. अटल तिवारी ने दिया। प्रशिक्षकों द्वारा सॉफ्टवेयर की बारीकियां छात्रों को अच्छी तरह समझायी गईं व साथ ही उनकी समस्याओं का भी समाधान कराया गया। सभी विद्यार्थियों के कोर्स पूरा करने पर एक आयोजन किया गया, जिसमें प्रमाण पत्र देकर कार्यशाला का समापन हुआ।

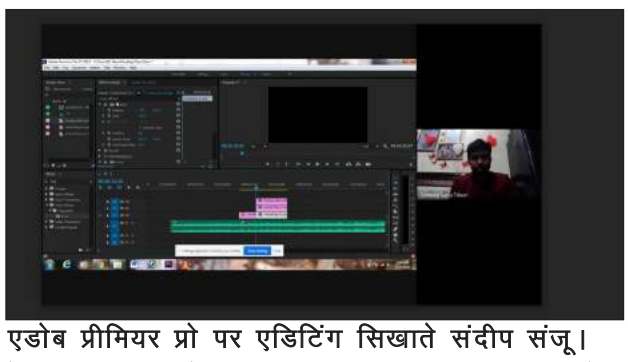

एडोब प्रीमियर प्रो पर एडिटिंग सिखाते संदीप संजू।

विद्यार्थियों ने समझा शेयर बाजार का दांव–पेंच

'मैं आपको बताऊंगा कि अमीर कैसे बनें'

सुमित

नई दिल्ली। राम लाल आनंद कॉलेज की कामर्स सोसाइटी 'क–चिंग' ने सत्र का पहला आयोजन 'स्टॉकओक्लॉक' के रूप में किया। यह कार्यक्रम 8 फरवरी को ऑनलाइन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष हर्ष गोयल, हर्ष गोयल स्कूल ऑफ फाइनेंस के सह–संस्थापक, शेयर बाजार प्रशिक्षक और निवेशक हैं।

इस कार्यक्रम का शुभारंभ कॉमर्स विभाग की प्रमुख डॉ. नूपुर साबू ने किया। कार्यक्रम को शेयर बाजार के बारे में जगरुकता फैलाने के लिए आयोजित किया गया। हर्ष गोयल ने छात्रों से शेयर बाजार को लेकर बातचीत की। विद्यार्थियों को शेयर बाजार के नफा नुकसान से रूबरू किया। कार्यक्रम की संयोजक मिशा सबरीन ने भी अपने विचार रखे। उम्मीद है कि अब छात्र शेयर बाजार की महत्वपूर्ण बातों को समझ पाएंगे। इसमें विभिन्न कॉलेज के 130 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया था। हालांकि कोविड–19 महामारी की स्थिति को देखते हुए यह कार्यक्रम वर्चुअल ही रखा गया था, वर्चुअल कार्यक्रम होने के बावजूद 130 छात्रों का हिस्सा लेना बड़ी सफलता माना जा सकता है।

आरएलए समाचार संरक्षक मंडल

प्राचार्य
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष
डॉ. सुभाष चंद्र डबास

संयोजक
डॉ. राकेश कुमार

परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी

संपादक
अभिषेक कुमार उपाध्याय

संपादकीय सहयोग
विकास त्रिपाठी
चेतना काला
शिल्पी कुमारी
शिवानी मिश्रा